P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कृषि विकास केन्द्र एवं ग्रामीण विकास : जनपद मेरठ का एक भौगोलिक अध्ययन

धनबीर सिंह
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
दिगम्बर जैन कॉलिज
बड़ौत, बागपत,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कृषि मानव का प्राचीन उद्यम है। मानव सभ्यता के विकसित होने से कृषि कार्यों में विविधता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या की मुख्य आजीविका कृषि पर निर्भर करती है। कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आधार प्रदान करने का प्रमुख साधन है। कृषि पर निर्भर उद्योग–धन्धे ग्रामीण स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराकर बेरोजगारी, गरीबी तथा पलायन जैसी समस्या को कम करते हैं। कृषि के विकास में कृषि सुविधा केन्द्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण एवं कृषि विकास संभव नहीं है। कृषि के पिछड़ेपन को दूर करने में यह सेवा केन्द्र महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र का सर्वांगीण विकास विकसित कृषि पर निर्भर करता है और विकसित कृषि, कृषि सुविधा केन्द्रों पर निर्भर करती है। कृषि सुविधा केन्द्रों पर जनसंख्या की अत्यधिक निर्भरता कृषि विकास में बाधक बनी हुई है। कृषि सुविधा केन्द्रों ने कृषि को विकसित करने के साथ–साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ एवं विकसित करने का कार्य किया है।

मुख्य शब्द : कृषि सेवा केन्द्र, ग्रामीण विकास, अर्थव्यवस्था, साधन, ग्रामीण क्षेत्र।

प्रस्तावना

ग्रामीण क्षेत्र की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। यह जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों में संलग्न है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि ही एक मात्र रोजगार का स्रोत है। कृषि में मशीनीकरण के प्रयोग ने एक तरफ तो कृषि उत्पादन वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, वहीं दूसरी ओर रोजगार को भी प्रभावित किया है। जिस प्रकार ग्रामीण विकास आधारभूत संसाधनों पर निर्भर करता है, उसी प्रकार कृषि विकास कृषि सेवा केन्द्रों पर निर्भर करता है। कृषि सेवा केन्द्रों की उच्च उपलब्धता कृषि एवं ग्रामीण विकास को गति प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि सेवा केन्द्र विरलता को धारण करते हैं। इसके साथ ही साथ जनसंख्या की उच्च निर्भरता इन सेवा केन्द्रों पर दिखलाई पड़ती है।

कृषकों की अशिक्षा कृषि विकास में बाधक बनी हुई है। अशिक्षा के कारण ही कृषक कृषि में तकनीकी का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप कृषि उत्पादन तथा उत्पादकता प्रभावित होती है। यातायात एवं परिवहन सुविधाओं के अभाव के कारण कृषक उन्नत किस्म के बीजों, उर्वरक, कीटनाशक तथा कृषि यन्त्रों के प्रयोग से वंचित रह जाते हैं। कृषकों को सस्ती दर पर ऋण की सुविधा उपलब्ध न हो पाने के कारण कृषक नवीनतम कृषि को क्रय करने से वंचित रह जाते हैं। इसी के साथ लघु व कुटीर उद्योग–धन्धों को स्थापित नहीं किया जाता है। ग्रामीण स्तर पर कृषि आधारित उद्योग–धन्धों के विकसित न होने के कारण बेरोजगारी जैसी समस्याऐं उत्पन्न हो रही हैं। इसीलिए ग्रामीण विकास का स्तर निम्न बना हुआ है।

साहित्यावलोकन

कृषि एवं ग्रामीण विकास से सम्बन्धित शोध कार्य स्वदेशी एवं विदेशी विद्वानों द्वारा किये गये हैं। इनके कार्यों को कालक्रमानुसार निम्न प्रकार व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है–

प्रताप (2001) ने कृषि एवं ग्रामीण विकास में आधारभूत सुविधाओं का अध्ययन किया। पोस्टर (2002) ने यातायात एवं परिवहन सुविधाओं की उच्च उपलब्धता को ग्रामीण एवं कृषि विकास का प्रमुख आधार बताया है। बाल (2005) ने कृषि विकास में मशीनीकरण के उपयोग के साथ–साथ कृषि सुविधा केन्द्रों को अति महत्वपूर्ण बताया। कृषि विकास के माध्यम से पलायन को रोका जा सकता है। डिनिस (2006) ने अपने शोध में पाया कि बाजार सुविधाऐं कृषि

उत्पाद को सही दाम दिलाने का कार्य ग्रामीण स्तर पर करती है। वेबर (2007) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण बाजारों का स्थान ऐसी जगह अवस्थित होना चाहिए जहां पर सेवा प्राप्त करने वाली बस्तियां अधिक हों। कुसलू (2008) ने अपने अध्ययन में बताया कि सिंचाई सुविधाऐं न केवल कृषि उत्पादन को बढ़ाने में मदद करती है, बल्कि प्रवास को रोकने में भी सहायक होती है। पटनायक (2009) ने ग्रामीण विकास में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना पर अध्ययन किया। इन्होंने बताया कि ग्रामीण स्तर पर रोजगार प्रदान करने तथा आधारभूत संरचना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कौर (2010), इन्होंने अपने अध्ययन में लघु एवं कुटीर उद्योग–धन्धों के विकास हेतु रणनीति विकसित की। इन्होंने बताया कि आर्थिक विकास में लघु एवं कुटीर उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पालनी पुरई (2011) ने वैश्विकरण एवं ग्रामीण विकास पर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रसाद (2012) ने कृषि एवं सतत् विकास पर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया। इन्होंने ग्रामीण विकास हेतु कृषि को विकसित करने पर बल दिया। अहमद (2013) ने सहकारिता एवं ग्रामीण विकास पर अध्ययन किया। अपने इस अध्ययन में इन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र के विकास में सहकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कटार सिंह एवं अनिल सिसौदिया (2016) ने ग्रामीण विकास सिद्धांत, रणनीति एवं प्रबन्धन पर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया। प्रभु (2017) ने तीव्र गति से कृषि विकास एवं ग्रामीण विकास से सम्बन्धित अपना अध्ययन प्रस्तुत किया। इन्होंने कृषि विकास की समस्याओं एवं संभावनाओं पर विकासात्मक कार्य प्रस्तुत किया। शेखर (2018) ने कृषि एवं सतत् विकास पर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है। इन्होंने तकनीकी संसाधनों को कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख आधार बताया।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु जनपद मेरठ के ग्रामीण क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। जनपद मेरठ पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक विकसित जिला है, जिसका अक्षांशीय विस्तार 28º51' उत्तरी अक्षांश से 29º02' उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा देशान्तरीय विस्तार 77º40' पूर्व से 77º45' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 2590 वर्ग किमी० है। इसकी उत्तरी सीमा पर मुजफ्फरनगर, उत्तर–पश्चिम में शामली, पश्चिमी सीमा पर बागपत, दक्षिणी सीमा पर गाजियाबाद, उत्तर–पूर्वी सीमा पर बिजनौर तथा अमरोहा जनपद अवस्थित है। गंगा नदी जनपद मेरठ की पूर्वी सीमा तथा हिण्डन नदी पश्चिमी सीमा रेखा पर निर्धारण करती है। यह जनपद गंगा–यमुना दोआब में अवस्थित एक कृषि उपजाऊ क्षेत्र है। मैदानी प्रदेश में अवस्थित होने के कारण यातायात एवं परिवहन सुविधएं विकसित अवस्था में हैं। इसकी भूगभिक संरचना का निर्माण परतदार चट्टानों से हुआ है। यहां पर भूमिगत जल की उच्च उपलब्धता मौजूद है। सिंचाई के पर्याप्त साधन विकसित अवस्था में है। कृषि विकसित अवस्था में है, जिसके परिणाम स्वरूप उद्योग–धन्धे विकसित अवस्था में हैं।

उद्देश्य एवं महत्व

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. कृषि एवं ग्रामीण विकास के स्तर एवं प्रतिरूप को ज्ञात करना।
2. कृषि सेवा केन्द्रों के स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप को ज्ञात करना।
3. कृषि सेवा केन्द्रों पर जनसंख्या की निर्भरता को ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोध का प्रमुख महत्व कृषि सुविधा केन्द्रों की स्थिति, उपलब्धता, स्थानिक संगठन तथा प्रतिरूप की जानकारी प्रदान करने में मदद करेगा। यह कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए नियोजन का आधार बनेगा। यह कृषकों के लिए कृषि सुविधा केन्द्रों को स्थापित करने में मदद करेगा।

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाओं का चयन किया गया है–

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि सुविधा केन्द्रों पर जनसंख्या का दबाव अत्यधिक है।
2. अध्ययन क्षेत्र में कृषि एवं ग्रामीण विकास का स्तर अति न्यून है।
3. कृषि सुविधा केन्द्रों का अभाव कृषि विकास में बाधक बना हुआ है।

आंकड़ों का संग्रह एवं विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े अध्ययन क्षेत्र से प्रश्नावली, अनुसूची, व्यक्तिगत साक्षात्कार, सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त किये गये हैं, जबकि द्वितीयक आंकड़े जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मेरठ से प्राप्त किये गये हैं। शोध समस्या के स्तर तथा प्रतिरूप को ज्ञात करने हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

कृषि सुविधा केन्द्रों का स्थानिक वितरण

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में ग्रामीण क्षेत्र में वर्ष 2018 के अनुसार बीज विक्रय केन्द्र सहकारिता विभाग के अन्तर्गत 124, उर्वरक विक्रय केन्द्र 124, कीटनाशक विक्रय केन्द्र 1, ग्रामीण गोदाम 83, शीत भण्डार गृह 15 तथा कृषि सेवा केन्द्र 26 हैं। अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध कृषि सुविधा केन्द्रों के स्थानिक वितरण को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी–1

जनपद सहारनपुर में कृषि सुविधा केन्द्रों का स्थानिक वितरण (वर्ष 2018)

क्र० सं०	विकास खण्ड	बीज विक्रय केन्द्र	उर्वरक विक्रय केन्द्र	कीटनाशक विक्रय केन्द्र	ग्रामीण गोदाम	शीत भण्डार	कृषि सेवा केन्द्र
1.	सरुरपुर खुर्द	12	12	0	7	0	2
2.	सरधना	10	10	0	6	0	4
3.	दौराला	8	8	0	6	3	5
4.	मवाना कलां	12	12	0	10	3	0
5.	हस्तिनापुर	11	11	0	10	0	0
6.	परीक्षितगढ़	15	15	0	10	0	0
7.	माछरा	17	17	0	9	2	4
8.	रोहटा	9	9	1	4	0	2
9.	जॉनी खुर्द	8	8	0	7	0	0
10.	मेरठ	6	6	0	3	5	4
11.	रजपुरा	7	7	0	7	1	5
12.	खरखौदा	9	9	0	4	1	0
योग जनपद		**124**	**124**	**1**	**83**	**15**	**26**

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2018

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में सहकारिता विभाग के अन्तर्गत बीज विक्रय केन्द्र 124 है, जिनमें सर्वाधिक 13.71% विकास खण्ड माछरा तथा सबसे कम 4.84% मेरठ विकास खण्ड में है। उर्वरक विक्रय केन्द्र 124 है, जिनमें सर्वाधिक 13.71% विकास खण्ड माछरा तथा सबसे कम 4.84% मेरठ विकास खण्ड में है। कीटनाशक विक्रय केन्द्र 1 है, जो रोहटा विकास खण्ड में है। ग्रामीण गोदाम 83 हैं, जिनमें सर्वाधिक 12.05% विकास खण्ड मवाना कलां, हस्तिनापुर तथा परीक्षितगढ़ में है, जबकि सबसे कम 3.61% मेरठ विकास खण्ड में है। शीत भण्डार गृह 15 है, जिनमें सर्वाधिक 33.33% विकास खण्ड मेरठ तथा सबसे कम 6.67% रजपुरा व खरखौदा मेरठ तथा सबसे कम 6.67% रजपुरा व खरखौदा विकास खण्ड में है। कृषि सेवा केन्द्र 26 हैं, जिनमें सर्वाधिक 19.23% दौराला तथा रजपुरा विकास खण्ड में है, जबकि सबसे कम 7.69% सरूरपुर व रोहटा विकास खण्ड में है।

कृषि सुविधा केन्द्रों की उपलब्धता

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ कृषि सुविधाओं की उपलब्धता को प्रति हजार जनसंख्या पर प्राप्त किया गया है। इस आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध कृषि सुविधाओं पर जनसंख्या की उपलब्धता को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–2

जनपद मेरठ में कृषि सुविधा केन्द्रों की उपलबधता (वर्ष 2018)

(प्रति हजार जनसंख्या पर)

क्र०सं०	सुविधा केन्द्र	संख्या	उपलब्धता
1.	बीज विक्रय केन्द्र	124	0.07
2.	उर्वरक विक्रय केन्द्र	124	0.07
3.	कीटनाशक विक्रय केन्द्र	1	0.0006
4.	ग्रामीण गोदाम	83	0.05
5.	शीत भण्डार गृह	15	0.009
6.	कृषि सेवा केन्द्र	26	0.02

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2018

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में प्रति हजार जनसंख्या पर कृषि सुविधा केन्द्रों की उपलब्धता अति न्यून है, जिनमें बीज विक्रय केन्द्र की उपलब्धता 0.07, उर्वरक विक्रय केन्द्र उपलब्धता 0.07, कीटनाशक विक्रय केन्द्र 0.0006, ग्रामीण गोदाम 0. 05, शीत भण्डार गृह 0.009 तथा कृषि सेवा केन्द्र 0.02 है। इतनी कम उपलब्धता कृषि विकास हेतु उपयुक्त नहीं हैं। कृषि विकास हेतु कृषि सुविधा केन्द्रों को विकसित किया जाना अति आवश्यक है।

कृषि सुविधाओं का स्थानिक संगठन

किसी क्षेत्र के विकास हेतु सुविधाओं का स्थानिक संगठन मजबूत होना अति आवश्यक है। सुविधाओं की विरलता क्षेत्रीय विकास में बाधक बनती हैं। अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध सुविधाओं के स्थानिक संगठन को ई०सी० मैदर महोदय की 'औसत अन्तरालन विधि' के आधार पर प्राप्त किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि सुविधाओं के स्थानिक संगठन को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–3

जनपद मेरठ में कृषि सुविधाओं का स्थानिक संगठन (वर्ष 2018)

क्र०सं०	कृषि सुविधाऐं	संख्या	औसत अन्तरालन (किमी० में)
1.	बीज विक्रय केन्द्र	124	4.91
2.	उर्वरक विक्रय केन्द्र	124	4.91
3.	कीटनाशक विक्रय केन्द्र	1	54.68
4.	ग्रामीण गोदाम	63	6.41
5.	शीत भण्डार गृह	15	14.12
6.	कृषि सेवा केन्द्र	26	10.73

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2018

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में कृषि सुविधाओं का स्थानिक संगठन में बीज विक्रय केन्द्र 4.91 किमी०, उर्वरक विक्रय केन्द्र 4.91 किमी०, कीटनाशक विक्रय केन्द्र 54.68 किमी०, ग्रामीण गोदाम 6.41 किमी०, शीत भण्डार गृह 14.12 किमी० तथा कृषि सेवा केन्द्र 10.73 किमी० की औसत दूरी पर अवस्थित है। उक्त आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कृषि सुविधाओं के मध्य औसत अन्तराल अधिक है, जिस कारण उन पर जनसंख्या की निर्भरता अधिक है।

कृषि विकास का स्तर

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में कृषि विकास के स्तर को ज्ञात करने के लिए उन्नत बीज विक्रय केन्द्र (x_1), उर्वरक विक्रय केन्द्र (x_2), कृषि मण्डी (x_3), साप्ताहिक बाजार (x_4), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (x_5), शीत भण्डार गृह (x_6), उत्पादकता (x_7), तथा यातायात एवं परिवहन सुविधाओं (x_8) को आधार मानकर z-score तथा composite z-score के आधार पर परिणाम प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के स्तर को composite z-score के आधार पर निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–4

जनपद मेरठ में कृषि विकास का स्तर (वर्ष 2018)

(Composite Z-Score के आधार पर)

क्र०सं०	श्रेणी	विकास का स्तर	विकास खण्ड
1.	अति उच्च	> 1.50	मवाना कलां, दौराला
2.	उच्च	1.00 – 1.50	माछरा, रोहटा, खरखौदा
3.	मध्यम	0.50 – 1.00	सरधना, सरूरपुर खुर्द, जॉनी खुर्द
4.	निम्न	0 – 0.50	मेरठ, रजपुरा
5.	अति निम्न	<0	हस्तिनापुर, परीक्षितगढ़

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2018

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में कृषि विकास का अति निम्न स्तर हस्तिनापुर (–1.27) तथा परीक्षितगढ़ (–1.07) में है, जबकि सर्वोच्च स्तर मवाना कलां (1.87) तथा दौराला (1. 68) में है। इन विकास खण्डों में कृषि सुविधा केन्द्र विकसित अवस्था में है, जिस कारण कृषि का विकास अति उच्च है।

ग्रामीण विकास का स्तर

अध्ययन क्षेत्र जनपद मेरठ में ग्रामीण विकास का स्तर प्राप्त करने के लिए साक्षरता (x_1), प्रति व्यक्ति आय (x_2), परिवहन सुविधाऐं (x_3), कृषि सेवाऐं (x_4), चिकित्सकीय सुविधाऐं (x_5) तथा लघु एवं कुटीर उद्योग–धन्धों (x_6) के z-score तथा composite z-score के आधार पर प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। composite z-score के आधार पर ग्रामीण विकास के स्तर को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–5

जनपद मेरठ में ग्रामीण विकास का स्तर (वर्ष 2018)

(Composite Z-Score के आधार पर)

क्र०सं०	श्रेणी	विकास का स्तर	विकास खण्ड
1.	अति उच्च	> 1.50	रजपुरा, मवाना कलां
2.	उच्च	1.00 – 1.50	दौराला, सरधना
3.	मध्यम	0.50 – 1.00	सरूरपुर खुर्द, जॉनी खुर्द, रोहटा, माछरा
4.	निम्न	0 – 0.50	मेरठ, खरखौदा
5.	अति निम्न	<0	परीक्षितगढ़, हस्तिनापुर

स्रोत– जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मेरठ, वर्ष 2018

उपरोक्त सारणी के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास का सर्वोच्च स्तर रजपुरा (1.67) तथा मवाना कलां (1.52) में है, जबकि सबसे निम्न परीक्षितगढ़ (–2.35) तथा हस्तिनापुर (–1.83) में है। हस्तिनापुर तथा परीक्षितगढ़ में कृषि सुविधा केन्द्रों का अभाव तथा यातायात एवं परिवहन सुविधाओं के अभाव के कारण ग्रामीण विकास का स्तर अति न्यून है।

निष्कर्ष

ग्रामीण क्षेत्र का विकास कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग–धन्धों पर निर्भर करता है। कृषि का विकास कृषि सुविधा केन्द्रों से प्रभावित होता है। कृषि को गति प्रदान करने में कृषि सुविधाऐं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यद्यपि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पिछले 3 दशकों में तीव्र गति से परिवर्तन आया है, परन्तु कृषि का विकास उस अनुपात में नहीं हो पाया है, जितना अपेक्षित है। ग्रामीण विकास हेतु सरकार विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम क्रियांवित कर रही है, जिससे कि ग्रामीण स्तर पर रोजगार के साधन विकसित हो सकें तथा गरीब एवं पिछड़े क्षेत्र का विकास हो सके। सरकार कृषि विकास हेतु विभिन्न प्रकार के रियासती ऋण प्रदान कर ग्रामीण स्तर पर लघु एवं कुटीर उद्योग–धन्धों को विकसित कर रोजगार के अवसर प्रदान कर गरीबी एवं पलायन जैसी समस्या को कम करने का प्रयास कर रही है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यहां पर कृषि विकास केन्द्रों की उपलब्धता बहुत ही कम है, जिसके परिणामस्वरूप कृषि का विकास निम्न स्तर पर है। कृषि के अल्प विकसित होने के कारण ग्रामीण अर्थ व्यवस्था पिछड़ी हुई है, जिसके परिणाम स्वरूप ग्रामीण विकास का स्तर न्यून है। जिन क्षेत्रों में कृषि सुविधाएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, वहां कृषि एवं ग्रामीण विकास का स्तर उच्च है। कृषि सुविधाओं की विरलता होने से कृषकों को सुगमता से रासायनिक उर्वरक एवं बीज उपलब्ध नहीं हो पाती है। कृषि सुविधा केन्द्रों के मध्य औसत दूरी अधिक है, जिसमें बीज विक्रय केन्द्र 4.91 किमी०, उर्वरक विक्रय केन्द्र 4.91 किमी०, कीटनाशक विक्रय केन्द्र 54.68 किमी०, ग्रामीण गोदान 6.41 किमी०, शीत भण्डार गृह 14.12 किमी० तथा कृषि सेवा केन्द्र 10. 73 किमी० की औसत दूरी पर अवस्थित है। औसत दूरी अधिक होने के कारण इन पर जनसंख्या की निर्भरता अधिक है।

सुझाव

1. कृषि का विकास ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को विकसित करने में मदद करेगा। इसलिए कृषि आधारित उद्योग–धन्धे ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित करके गरीबी, बेरोजगारी तथा पलायन जैसी समस्या को कम किया जा सकता है।
2. यातायात एवं परिवहन सुविधाएं विकसित कर ग्रामीण क्षेत्र को नगरों से जोड़ा जाए, जिससे कृषि उत्पाद को बाजारों में सुगमता से पहुंचाया जा सके। जिससे कृषकों को कृषि उत्पाद का उचित दाम प्राप्त हो सकेगा।
3. जनसंख्या के अनुपात में कृषि सुविधाएं विकसित की जाऐं, जिससे कि प्रत्येक कृषक कृषि सुविधाऐं प्राप्त कर सकें।
4. लघु कालिक, दलहन एवं तिलहन जैसी फसलों को वरीयता प्रदान कर कृषि योग्य भूमि की उत्पादकता को लम्बी अवधि तक बनाये रखा जा सकता है।
5. नवीनतम कृषि तकनीक तथा कृषि यन्त्रों के बारे में सभा एवं संगोष्टियों के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जाए।

सन्दर्भ सूची

Agarwal, M. (2003), "Economic Participation of Rural Women in Agriculture", RBSS Publication, Jaipur, Rajasthan.

Bhatt, Shital (2012) "Kisan Credit Card an Instrument for Financial Inclusion", International Indexed and Referred Research Journal.

Das, A.K. and Swain, P. (2009), "Women in Dairy Cooperative Society", National Seminar on Managing Rural Livelihood in India : Challenges and Opportunities.

Golait, Ramesh (2007) "Current Issues in Agriculture Credit in India : An Assessment", Reserve Bank of India Occasional Paper.

Karmakar, K.G. (2008) "Agriculture and Rural Development in North-Eastern India : The Role of NABARD", ASCI, Journal of Management.

Kumar, Suresh (2016) "Role of Agro-Industries in Rural Employment – A Geographical Study of Block Joya", Shrinkhla Ek Sodhparakh Vaicharik Patrika, Vol. 3, No. 1, July 2016, p. 13-17.

Marothia, K.D. (2003) "Enhancing Sustainable Management of Water Resource in Agriculture Sector", Indian Journal of Agricultural Economic, Vol. 58, No. 3.

Prabhu, Pingali (2017) "Agriculture and Rural Development in a Globalizing World-Challenges and Opportunities Publication, Rontledge."

Singh, Katar (2011) "Rural Development Principles Policies and Management", Sage Publication, New Delhi.

Tripathi, Shruti (2013) "Road Transport Infrastructure and Economic Growth in India", Journal of Infrastructure Development, Sage Publication, New Delhi.